

## चीन को लेकर भारत की असहजता दूर करने के प्रयास में श्रीलंका

### सन्दर्भ

हृदि महासागर में चीन की मौजूदगी को लेकर भारत की असहजता दूर करने के प्रयास के तहत श्रीलंका ने कहा है कि वह यह सुनिश्चित करना चाहेगा कि ऐसी किसी भी गतिविधि से भारत के सरोकारों के समक्ष कोई खतरा उत्पन्न न हो, साथ ही, भारत द्वारा त्रिकोमाली बंदरगाह को विकसित करने को लेकर भी दोनों देशों के बीच बातचीत जारी है। श्रीलंका के क्षेत्रीय विकास मंत्री सरत फोनसेका ने 'रायसीना डायलॉग 2017' में कहा कि त्रिकोमाली दक्षिण एशिया में सबसे गहरा बंदरगाह है जिसे विकसित करने के उद्देश्य से विभिन्न मुद्दों को अंतिम रूप दिया जा रहा है।

### श्रीलंका के सुर में बदलाव क्यों?

- दरअसल, श्रीलंका का कहना है कि चीन द्वारा विकसित हंबनटोटा बंदरगाह कोई लाभ नहीं दे रहा है तथा धनराशि चुकाने के लिये वह एक बोझ बन गया है।
- वदिति हो कि हंबनटोटा बंदरगाह को विकसित करने के क्रम में पहले चरण के निर्माण की कुल अनुमानित लागत 36.1 करोड़ डॉलर है तथा इसका अधिकतर वित्तपोषण चीन के एग्जिमि बैंक ने किया है।
- श्रीलंका का यह भी मानना है कि इस परियोजना के दौरान उसे अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा, साथ ही, इस बंदरगाह के निर्माण कार्य के दौरान भ्रष्टाचार के मामले भी सामने आए हैं। अतः श्रीलंका अपनी अवसरचना निर्माण की नीतियों पर पुनर्विचार करेगा।

### हालिया परिदृश्य

- ध्यातव्य है कि हाल ही में कर्रज से छुटकारा पाने के लिये श्रीलंका ने चीन के साथ हंबनटोटा बंदरगाह का सौदा करने का निर्णय लिया है। दरअसल, अपने कर्रज को कम करने के लिये श्रीलंका दक्षिणी बंदरगाह का 80 फीसद हिस्सा 1.5 बिलियन डॉलर की कीमत पर चीन की एक कंपनी को बेचने जा रहा है।
- वदिति हो कि वर्ष 2010 में महदिरा राजपक्षे के शासनकाल में चीन से कर्रज और कंटेनर टर्म्स की मदद लेकर हंबनटोटा बंदरगाह का निर्माण किया गया था। इस बंदरगाह में चीन की रुचि उसके 'मैरिटाइम सिल्वर रूट' में इसकी उपयोगिता के तौर पर देखी जाती है। गौरतलब है कि श्रीलंका के वर्तमान राष्ट्रपति मैत्रीपाला सरिसेना ने श्रीलंका में संचालित अवसंरचना विकास से संबंधित अधिकांश चीनी परियोजनाओं को नरिस्त कर दिया है।

### नषिकर्ष

- वर्तमान विश्व व्यवस्था में महासागरीय कूटनीति (ocean diplomacy) का महत्त्व और भी बढ़ गया है और इसी कूटनीति के तहत चीन हृदि महासागर में अपना प्रभुत्व स्थापित करना चाहता है, लेकिन हाल फलिहाल की कुछ घटनाओं से चीन की इस कोशिश को झटका पहुँचा है।
- कुछ समय पहले ही श्रीलंका के राष्ट्रपति चुनाव में चीन के करीबी समझे जाने वाले महदिरा राजपक्षे की हार हुई और तब नव नरिवाचिता राष्ट्रपति मैत्रीपाला सरिसेना ने भारत-केंद्रित नीतिकी बात कही थी, साथ ही, यह संकेत भी दिया था कि चीनी नविश की समीक्षा की जाएगी।
- अब, भारत को घेरने के मकसद से श्रीलंका के करीब आने की चीन की कोशिश नाकाम होती नज़र आ रही है, क्योंकि श्रीलंका के हंबनटोटा बंदरगाह में चीनी नविश के खिलाफ हसिक संघर्ष शुरू हो गया है। नए साल की शुरुआत में ही हंबनटोटा बंदरगाह के समीप औद्योगिक क्षेत्र के उद्धघाटन समारोह के दौरान हज़ारों की संख्या में लोगों ने वरिध-प्रदर्शन और पत्थरबाज़ी की थी।
- हालाँकि, हृदि महासागर में चीनी प्रभुत्व को खत्म करने के लिये यह नाकाफी होगा। इन उद्देश्यों के लिये भारतीय नीति-नियामकों को इस बात पर ज़ोर देना चाहिये कि हृदि महासागर में हमारे हतियों को बढ़ावा मलि, और इसके लिये चीन जहाँ भी वफिल हो रहा है उस मौके को भुनाने के सर्वोत्तम प्रयास किये जाने चाहिये।